प्रारंभिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण में उभरती प्रवृत्तियाँ एवं नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ

विजय कुमार चावला
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्योड़क जिला कैथल, हरियाणा
ईमेल – vijaychawla95@gmail.com दूरभाष–9416189435

सारांश *– भाषा शिक्षण में मातृभाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मातृभाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा प्रभावकारी और सहजग्राह्य होती है। मनुष्य की सहज अभिव्यक्ति का साधन मातृभाषा ही है। यही कारण है कि विश्वविख्यात शिक्षा शास्त्रियों ने मातृभाषा अर्थात आम बोलचाल की भाषा {बिक्स}{L1} के माध्यम से बच्चों को शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल दिया है। सीखने के सिद्धांतों में एक अनिवार्य आवश्यकता है – सीखने के लिए बच्चों को ज्ञात से अज्ञात , परिचित से अपरिचित की ओर बढ़ाना चाहिए। प्रारंभिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण में शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के घर की भाषा {L1} का उपयोग बहुत जरूरी माना गया है।*

इस शोध पत्र में आज शिक्षा के क्षेत्र में "प्रारंभिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण में उभरती हुई प्रवृत्तियाँ और नवीन शिक्षण पद्धतियाँ" विषय की समीक्षा की गई है। प्रारंभिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण को रुचिकर व आनंदमयी बनाने के लिए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नवाचार तकनीक के प्रयोग पर बल देने के लिए भी सुझाव दिए गए हैं। आज कक्षा–कक्ष में अध्यापक को प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण करवाते हुए पारंपरिक शिक्षण दृष्टिकोण का उपयोग करने के बजाय नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए। कक्षा–कक्ष में हिन्दी भाषा शिक्षण के अंतर्गत नवाचारी गतिविधियाँ का प्रयोग बहुत लाभकारी होता है। कक्षा– कक्ष में हिन्दी भाषा शिक्षण को रुचिकर व आनंदमयी बनाने में भाषा संबंधी खेल गतिविधियों का उपयोग बहुत कारगर होता है। इसके अतिरिक्त प्रारंभिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण में सूचना संचार तकनीक एवं अन्य नवीन प्रयोगों को लागू करने के संदर्भ में तर्क भी प्रदान किए गए हैं।

कुंजी शब्द: बिक्स {BICS and Basic Interpersonal Communication Skill}, L1, कैल्प {CALP&Cognitive Academic Language Proficiency}, L2, स्मार्ट वर्चुअल कक्षा–कक्ष, ई–पाठशाला, ई–कंटेंट, मोबाइल एप्प।

भूमिका:

राष्ट्र के पुनर्निर्माण के कार्य में भाषा की शिक्षा का विशेष महत्त्व है। भाषा ही हमारे चिंतन का आधार है। भाषा के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान–विज्ञान के अनेकानेक विषयों का अध्ययन करता है। यदि विद्यार्थी का अधिकार भाषा पर नहीं होगा तो वह ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में प्रगति नहीं कर पाएगा। अतः विद्यार्थी को भाषा का ज्ञान होना अति अनिवार्य है। भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। बालक अपने परिवार में माता–पिता, भाई–बहन एवं परिवार के अन्य सदस्यों के अनुकरण द्वारा आसपास के वातावरण से भाषा सीखता है , जिसे आम बोलचाल की भाषा अर्थात बिक्स व L1 के नाम से जाना जाता है।

मातृभाषा अर्थात L1 के माध्यम से मनुष्य अपनी बात जिस सरलता से कह सकता है, वह किसी अन्य भाषा में नहीं कह सकता। महात्मा गाँधी ने तो यहाँ तक कहा है कि – "मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है, जितना कि बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध। .... उसके मानसिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा लादना मैं मातृभूमि के विरुद्ध पाप समझता हूँ।" 1

दक्षिण एशियाई देशों की तरह भारत भी एक बहुभाषी देश है। भारत की राष्ट्रीय जनगणना मैं अलग–अलग मातृभाषाओं को बोलने वालों की गणना करने का प्रयास किया गया। भारत में 1652 मातृभाषाएं दर्ज की गईं हैं। 122 में से केवल 26 भाषा ही ऐसी है जो प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती है। भारत के 3 राज्यों जम्मू कश्मीर , नागालैंड , अरुणाचल प्रदेश के सभी सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। प्रारंभिक स्तर पर भाषायी विविधता को देखते हुए अध्यापक को आम बोलचाल की भाषा अर्थात मातृभाषा , बिक्स {L1} से विद्यालय की अकादमिक भाषा कैल्प अर्थात {L2} की ओर अग्रसर होना चाहिए। यही आजकल भाषा शिक्षण की उभरती हुई प्रवृत्ति है। प्रारंभिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण में भाषा शिक्षण का यह तरीका बेहद कारगर सिद्ध होता है।

प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ :

प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण में भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ : वर्तमान में प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ ही भाषा शिक्षण में चुनौती के रूप में उभरकर सामने आती हैं । इसमें बच्चों का कक्षा–कक्ष में कम बोलना अर्थात चुप्पी की संस्कृति का पाया जाना, मौखिक भाषा विकास पर जोर ना दिया जाना , बातचीत के अवसर कक्षा–कक्ष में ना के बराबर होना, अध्यापन के दौरान शिक्षक द्वारा सामूहिक दोहरान पर जोर देना , पढ़ना सिखाने में अर्थ निर्माण पर बिल्कुल भी जोर ना देना , बच्चों का अर्थ समझे बिना ही पढ़ते रहना, डिकोडिंग का अव्यवस्थित शिक्षण होना, बच्चों का टाइम ऑन टास्क कम होना तथा कक्षा– कक्ष में बच्चों की सक्रिय भागीदारी ना होना आदि प्रमुख पहलू हैं।

प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण में शिक्षण व्यवस्था संबंधी पहलू :– प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण में शिक्षण व्यवस्था संबंधी पहलू भी एक चुनौती का कार्य कर रहे होते हैं । विद्यालय में केवल पाठ्य पुस्तक पर आधारित शिक्षण का होना , बच्चों के लिए सरल और पूरक पठन सामग्री का ना पाया जाना , जो बच्चे पिछड़ रहे हैं वे पिछड़ते चले जाते हैं , आदि ऐसे शिक्षण व्यवस्था संबंधी पहलू हैं जो चुनौती का कार्य कर रहे होते हैं ।

प्रारंभिक स्तर पर कक्षाओं में भाषा की विविधता का होना : भारत में भाषायी स्थिति विविध और लचीली है। भाषाविद भी इस बात से सहमत हैं कि ज्यादातर बच्चे बहुभाषी होते हैं। बहुत से सर्वेक्षण यह बताते हैं कि प्रारम्भिक स्तर पर विद्यालय में दाखिल होने वाले बच्चों को विद्यालय की मानक भाषा की समझ बहुत कम होती है। इसका कारण स्कूली भाषा {L2} और घर की भाषा में {L1} अंतर का पाया जाना है। भाषायी स्थिति का एक अन्य पहलू यह भी है कि कक्षाओं में कई प्रथम भाषाओं वाले बच्चे होते हैं।

पाठ्यक्रम एवं शिक्षण में भाषा संबंधी मान्यताएं :

प्रारंभिक स्तर पर भाषा – पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें निम्न मान्यताओं के अनुसार बनाई जाती हैं :

पाठ्यक्रम बनाते समय यह मान लिया जाता है की पाठ्यपुस्तक की मानक भाषा ही सभी या ज्यादातर बच्चों की प्रथम भाषा है। जबकि यह धारणा बिल्कुल गलत है। दूसरा यह मानना कि कक्षाएं एक–भाषी हैं , अर्थात कक्षा के सभी बच्चों की प्रथम भाषा एक जैसी है और वे उसे अच्छी तरह बोलना जानते हैं। यह भी भारत के परिवेश में पूर्ण रूप से सही नहीं है। इन दोनों धारणाओं के कारण आजकल भाषा शिक्षण में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

असाक्षर या अल्प साक्षर घरों से आने वाले बच्चे : स्कूल में दाखिला लेते समय सभी बच्चों की मौखिक भाषा समृद्ध होती है और वे अपनी भाषा में धारा प्रवाह से बोल सकते हैं। परंतु असाक्षर तथा अल्प साक्षर परिवारों के बच्चों को स्कूल में पढ़ना–लिखना सीखने सिखाने में समस्याएं होती हैं। इसका प्रमुख कारण– कमजोर पृष्ठभूमि के बच्चों को घर में प्रिंट सामग्री का कोई अनुभव नहीं मिलता। घर में इन बच्चों के पास स्कूल के काम में मदद देने वाले लोग नहीं होते तथा कमजोर सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चों को पढ़ाई में कोई रूचि नहीं होती। ऐसे में विद्यालयों का उत्तरदायित्व बनता है कि वे इन बच्चों के लिए एक सहज शैक्षिक माहौल तैयार करें जिसमें इनका सीखना–सिखाना हो सके। जिन बच्चों की घर की भाषाएं स्कूल की मानक भाषा से बहुत भिन्न हैं, उनको शिक्षक द्वारा निरंतर मदद और प्रोत्साहन देने की जरूरत है क्योंकि ऐसे बच्चे अगर शुरुआत में पिछड़ जाएंगे तो वे आगे भी पिछड़ते चले जाएंगे।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए भाषा शिक्षण में अनेक उभरती हुई प्रवृत्तियों का प्रयोग देखने को मिल रहा है। जिनका विवरण निम्नानुसार है :

प्रारंभिक स्तर पर भारत में बहुभाषी शिक्षण देखने को मिलता है। बहुभाषी शिक्षण के मायने है दो या उससे ज्यादा भाषाओं का कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में औपचारिक उपयोग करना। बच्चे के ज्ञान और कौशलों को उसके भाषायी और सांस्कृतिक संदर्भ के जरिए विकसित करना। बहुभाषी शिक्षण को हम बच्चों के सामाजिक–सांस्कृतिक ज्ञान को स्कूली शिक्षा से जोड़ना भी कह सकते हैं। NCF 2005 भी बच्चों के सामाजिक–सांस्कृतिक ज्ञान को स्कूली शिक्षा से जोड़ने पर बल देता है। "बहुभाषी शिक्षण परिचित भाषा ज्ञान का आधार लेते हुए दोनों परिचित भाषा ज्ञान तथा नए अपरिचित भाषा ज्ञान को विकसित करना है।"2

प्रारंभिक कक्षाओं की भाषा परिस्थितियाँ काफी विविध और उलझी हुई हैं। भाषा शिक्षण की तीन प्रमुख पद्धतियाँ, जो प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण में अपनाई जा सकती है व जो आजकल उभरती हुई प्रवृत्तियों के रूप में देखने को मिल रही है वह निम्न अनुसार हैं:

पहली भाषा शिक्षण पद्धति L1 माध्यम आधारित भाषा शिक्षण पद्धति है। इस श्रेणी में कक्षा के सभी बच्चों की L2 की समझ सीमित से ना के बराबर होती है और सभी की L1 एक होती है। L1 और L2 एक दूसरे से बहुत अलग–अलग भाषाएं हैं और दोनों अलग–अलग भाषा समूह की हैं।3

दूसरी भाषा शिक्षण पद्धति L2 केन्द्रित भाषा शिक्षण पद्धति है। जिसमें L1 का सहारा साथ में लेकर शिक्षण कार्य किया जाता है। इस पद्धति में कक्षा के सभी बच्चों की L2 की समझ सीमित से ना के बराबर होती

है और सभी की L1 एक है। L1 और L2 दोनों मिलती–जुलती भाषाएं हैं और दोनों एक ही भाषा समूह की हैं।4

तीसरी भाषा शिक्षण पद्धति – जिसमें कई भाषाओं को कक्षा संसाधन के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इस श्रेणी में कक्षा के सभी बच्चों की L2 की समझ सीमित से ना के बराबर है और कक्षा में दो या उससे अधिक प्रथम भाषाएं हैं और एक दूसरे से अलग हो सकती हैं और मिलती–जुलती भी हो सकती हैं।5 हिन्दी भाषा शिक्षण की इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए ही प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण विद्यालय में करवाया जाना चाहिए और घर की भाषा से विद्यालय की भाषा की ओर बच्चों को लेकर आना चाहिए। ऐसा करते हुए हमें ट्रांसलैंग्वेजिंग या मिश्रित भाषा का प्रयोग कर लेना चाहिए ताकि बच्चों को भाषा का शिक्षण सही तरह से करवाया जा सके। मिश्रित भाषा का उपयोग वहीं सफल होता है, जहाँ कक्षा –कक्ष में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग हो रहा हो। बहुभाषी कक्षा–कक्ष में अध्यापक के द्वारा बहु भाषा शब्द दीवार, बहुभाषी पठन सामग्री, बहुभाषी शब्दकोश, व अन्य तकनीक के माध्यम से शिक्षण कार्य करवाया जा सकता है।

कक्षा– कक्ष में प्रिंट रिच और प्रिंट समृद्ध वातावरण मुहैया करवाना : बच्चों को भाषा शिक्षण का वातावरण उपलब्ध कराने के लिए प्रिंट रिच और प्रिंट समृद्ध वातावरण कक्षा– कक्ष में मुहैया करवाया जाना चाहिए। हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में इस काम को बखूबी किया जा रहा है। बच्चों को सरल पठन सामग्री तैयार करके हिंदी भाषा शिक्षण करवाया जा रहा है। जिसमें चित्रों के माध्यम से बच्चों को सोचने और समझने के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। चित्रों पर बातचीत करने के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं।6 कविता चार्ट, कहानी चार्ट, दीवार पत्रिका, वर्ण– अक्षर ग्रिड फ्लैश कार्ड, बड़ी किताब व डिकोडेबल पाठ आदि के माध्यम से हिंदी भाषा शिक्षण करवाया जा रहा है। बच्चों को पठन की रणनीति व समझ की रणनीतियों के माध्यम से हिंदी भाषा शिक्षण करवाया जा रहा है। प्रारंभिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण में इन सबके बेहतर परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

कक्षा–कक्ष में चार खंडीय रूपरेखा को ध्यान में रखकर पाठ योजना का निर्माण करना : कक्षा–कक्ष में चार खंडीय रूपरेखा को अपनाते हुए पाठ योजना का निर्माण कर हिंदी भाषा शिक्षण करवाया जाना चाहिए। जिसमें मौखिक भाषा के विकास के अवसर प्रदान किए जाने चाहिएं, डिकोडिंग क्षमता को विकसित किया जाना चाहिए। पठन और लेखन कौशल को भी विकसित किया जाना चाहिए। कक्षा–कक्ष में बच्चों को उनके अधिगम संप्राप्ति के आधार पर भाषा शिक्षण करवाया जाना चाहिए जो कि आजकल भाषा शिक्षण की एक उभरती हुई प्रवृत्ति बनकर सामने आ रही है।

बच्चों की विभिन्न दक्षताओं के आधार पर उनका आकलन : कक्षा– कक्ष में बच्चों की विभिन्न दक्षताओं के आधार पर बच्चों का आकलन किया जाना चाहिए। हरियाणा में बच्चों के आकलन करने के लिए सक्षम योजना लागू की गई है। कक्षा तीसरी, पाँचवीं तथा सातवीं के बच्चों को उनकी कक्षा के अनुसार हिन्दी विषय में जो दक्षताएं होनी चाहिएं, उसके लिए तैयार किया जा रहा है। इसके उपरांत बच्चों की विभिन्न दक्षताओं के आधार पर उनका आकलन किया जाता है।

भाषा शिक्षण को रुचिकर व आनंदमयी बनाने के लिए विभिन्न खेल गतिविधियों का प्रयोग : हिंदी भाषा शिक्षण को रुचिकर व आनंदमयी बनाने के लिए विभिन्न खेल गतिविधियों के माध्यम से हिंदी भाषा शिक्षण

करवाया जाना चाहिए। खेल–खेल के माध्यम से बच्चे तनावमुक्त हो कर भाषा के विभिन्न पहलुओं को आसानी से सीख जाते हैं। बच्चों की विषय में रुचि भी बढ़ जाती है। इससे कक्षा–कक्ष में बच्चों की सक्रिय भागीदारी भी हो जाती है। आजकल विद्यालयों में विभिन्न खेल गतिविधियों का प्रयोग करते हुए भाषा शिक्षण करवाया जा रहा है जो कि भाषा शिक्षण में उभरती हुई प्रवृत्ति के रूप में काफी कारगर सिद्ध हो रही है।7

भाषा शिक्षण के क्षेत्र में नवाचार पद्धतियों का प्रयोग :–

स्मार्ट कक्षा–कक्ष का प्रयोग : आधुनिक युग में बच्चों को स्मार्ट कक्षा–कक्ष के माध्यम से चित्र संयोजक,

अनुक्रम चार्ट बनाकर भाषा शिक्षण करवाने के बेहतर परिणाम देखने को मिल रहे हैं। कक्षा–कक्ष में बच्चों को ई–कंटेंट बनाकर यदि पढ़ाया जाता है तो बच्चों क विषय के प्रति लगाव बढ़ता है। विषय में उनकी रुचि बढ़ती है। सरल सामग्री {चित्रों, कविता चार्ट, कहानी चार्ट, पोस्टर, आदि} के माध्यम से बच्चों को शिक्षण प्रदान करने के बेहतर परिणाम निकलते हैं।8

हिन्दी भाषा शिक्षण लैब : हिन्दी भाषा शिक्षण लैब के माध्यम से बच्चों को भाषा शिक्षण कराना बेहद लाभदायक सिद्ध होता है। प्रारंभिक स्तर पर बच्चों को सुनने और बोलने के अवसर बहुत कम मिलते हैं यदि हिंदी भाषा के शुद्ध उच्चारण के लिए भाषा शिक्षण लैब का प्रयोग किया जाए तो बच्चों को स्वर व व्यंजन के सही उच्चारण का ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। हिन्दी भाषा शिक्षण लैब के माध्यम से– श्य–श्रव्य पठन सामग्री का सदुपयोग किया जा सकता है। भाषा लैब में ई–कंटैंट, सरल पठन सामग्री के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है तथा वेब पेज/क्रियात्मक शीट्स के माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन कार्य सफलतापूर्वक किया जा सकता है।9

अध्यापक का भाषा शिक्षण में सूचना संचार तकनीक का प्रयोग : अध्यापक सूचना संचार तकनीक का प्रयोग करते हुए पाठ योजना का अच्छी तरह निर्माण करते हुए बच्चों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शामिल कर सकता है। वह प्रश्नावली, क्रियात्मक शीट्स, बिंगो कार्ड आदि नवाचारी गतिविधियों के माध्यम से भाषा शिक्षण को प्रभावकारी बना सकता है। अध्यापक विषय से संबन्धित पाठ योजना चित्रों सहित तैयार करके प्रोजेक्टर व कम्प्यूटर के माध्यम से बच्चों को पढ़ा सकता है। कई अध्यापक इसका सफलता से प्रयोग भी कर रहे हैं।10

अ**ध्यापक और हिन्दी भाषा शिक्षण में नवाचारी ज्ञान :** अध्यापक आजीवन सीखने वाली प्रवृत्ति वाले होने चाहिएं। हम जानते हैं कि शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है। इंटरनेट का प्रयोग करते हुए हम ओपन रिसोर्सेज से विषय से संबंधित कोई भी जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। TESS– इंडिया ने भारत में शिक्षकों के लिए 125 खुले शैक्षिक संसाधन (ओईआर) निर्मित किए हैं। 11 ये संसाधन मुफ्त हैं और इन्हें डाउनलोड भी किया जा सकता है। आज मोबाइल एप्प व ई–कंटेंट के प्रयोग का युग है। मोबाइल एप्प पर बच्चों को शिक्षण सामग्री मुहैया कराते हुए हम विषय को अत्यंत सरल तरीके से व रोचक ढंग से समझा सकते हैं। प्रत्येक शिक्षक को अपने पेशे में शिक्षण कौशलों का निरंतर विकास करते रहना चाहिए। अध्यापक को

कार्यशालओं में भाग लेते रहना चाहिए ताकि नई शिक्षण तकनीकों से वे रूबरू हो सकें और अपनी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को कक्षा–कक्ष में बेहतर बना सकें।

ई संचार का प्रयोग : आज के युग में शिक्षा के क्षेत्र में ई–संचार का प्रयोग बड़ी अच्छी तरह किया जा रहा है। प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण में भी अध्यापक कक्षा–कक्ष में ई–संचार तकनीक का प्रयोग करते हुए भाषा शिक्षण करा सकता है। एक अध्यापक द्वारा भाषा शिक्षण के क्षेत्र में यदि नवाचारी गतिविधियाँ कक्षा–कक्ष में करवाई जा रही हैं और उसे वह यदि व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि के माध्यम से अन्य अध्यापकों के साथ साझा करता है तो उसके भी बेहतर परिणाम देखने को मिलते हैं। दूसरे अध्यापक भी उन नवीन शिक्षण विधियों से रूबरू हो सकते हैं तथा वे भी अपने शिक्षण में उसे अपना सकते हैं। इसलिए प्रत्येक अध्यापक को आज ई–संचार के माध्यम से अपने नवाचारी प्रयोगों को सबके साथ साझा करना चाहिए।

ई–पाठशाला एप्प एवं हिन्दी भाषा शिक्षण : ई–पाठशाला एप्प भी भाषा शिक्षण में अहम भूमिका अदा कर रही है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली द्वारा ई पाठशाला एप्प तैयार की गई है।12 जिसे ना केवल अध्यापक बल्कि बच्चे भी अपनी पढ़ाई में प्रयोग कर सकते हैं। हिन्दी भाषा शिक्षण में ई– पाठशाला के माध्यम से ई– कंटेंट आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। यह एप्प बच्चों की शिक्षा के लिए अत्यंत लाभकारी है। ई– पाठशाला एप्प पर कक्षा पहली से बारहवीं तक की विषय वार पाठ्य पुस्तकें अपलोड की गई हैं। जिनका सदुपयोग आसानी से किया जा सकता है।

प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण को बेहतर बनाने हेतु सुझाव : प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण को बेहतर बनाने हेतु मेरे कुछ सुझाव हैं जिन्हें सभी प्राथमिक विद्यालयों में लागू किया जाना चाहिए ताकि शुरुआत से बच्चों की हिन्दी भाषा की नींव सुदृढ़ बन सके। मैंने प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण में कई नई उभरती प्रवृत्तियों व नवाचारी पद्धतियों को अपनाया। कक्षा–कक्ष में इनके परिणाम बहुत ही सराहनीय रहे। आज सभी विद्यालयों में इन सुझावों को लागू करना अति अनिवार्य है। हिन्दी भाषा शिक्षण को बेहतर बनाने हेतु मेरे सुझाव निम्न प्रकार से हैं :–

बातचीत के अवसर देकर बच्चों संग बतलाना है,

.....

मौखिक भाषा के विकास से पहला कदम बढ़ाना है,

.....

नवाचार तकनीक अपनाकर हिंदी भाषा–ज्ञान कराना है ॥ 13

कक्षा– कक्ष में बातचीत व मौखिक भाषा के अधिक से अधिक से अवसर प्रदान किए जाने चाहिएं।

कक्षा– कक्ष में डिकोडिंग का व्यवस्थित शिक्षण करवाया जाना चाहिए।14

कक्षा– कक्ष में प्रिंट समृद्ध वातावरण व सरल पठन सामग्री का प्रयोग अति अनिवार्य है।15

कक्षा– कक्ष में अनुक्रम चार्ट , चित्र संयोजक , चित्रों का प्रयोग प्रोजेक्टर व कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाना चाहिए।

कक्षा– कक्ष में बच्चों को उनकी घर की अर्थात बोलचाल की भाषा {बिक्स} L1 का प्रयोग करते हुए विद्यालय की भाषा {कैल्प} L2 सिखाई जानी चाहिए।

भाषा शिक्षण में आई सी टी का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए।16

हिन्दी भाषा शिक्षण को रुचिकर व आनंदमयी बनाने के लिए खेल गतिविधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जिनमें बच्चों को बिंगो खेल, पासे का खेल, टिक टैक टो का खेल, साँप सीढ़ी का खेल, लूडो का खेल, मुझे मेरे परिवार से मिलाओ नामक खेल आदि शामिल हों।17

मोबाइल एप्प्स का प्रयोग करते हुए हिन्दी भाषा शिक्षण करवाया जाना चाहिए।

ई–कंटैंट, ओपन रिसौर्सेस का प्रयोग किया जाना चाहिए।

निष्कर्षतः हम पाते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा अर्थात L1 स्वयं साध्य की भूमिका निभाती है और अन्य विषयों के शिक्षण के लिए साधन अर्थात माध्यम के रूप में सिखाई जाती है। आज भारत में प्राथमिक स्तर हिंदी भाषा शिक्षण में भाषा शिक्षण की पद्धतियों में, शिक्षण के पहलुओं में, शोध पत्र में प्रस्तुत की गई उभरती हुई प्रवृत्तियों के प्रयोग की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसके लिए कक्षा–कक्ष में अध्यापकों को भाषा शिक्षण में नवाचारी प्रयोगों को अमलीजामा पहनाना होगा। नवाचारी तकनीक व प्रवृत्तियाँ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रोचक बनाती हैं। बच्चे खेल–खेल में भयमुक्त व तनावमुक्त होकर भाषा सीखने लगते हैं व उन्हें हिंदी भाषा रुचिकर लगने लगती है। हमें प्रत्येक विद्यालय में प्रारंभिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण में उभरती प्रवृत्तियों एवं नवाचारी शिक्षण पद्धतियों को अपनाते हुए बच्चों को भाषा शिक्षण करवाना होगा क्योंकि आजकल प्रारंभिक स्तर से ही बच्चों की हिंदी भाषा की नींव सुदृढ़ होनी बहुत जरूरी है।

संदर्भ {पाद टिप्पणी}

ज्योति शर्मा भनोट–विश्व ज्योति हिन्दी शिक्षण, पृष्ठ–7

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन 2018– विविध भाषायी परिस्थितियों में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता विकास– पृष्ठ–28

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन 2018– विविध भाषायी परिस्थितियों में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता विकास– पृष्ठ –29

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन 2018– विविध भाषायी परिस्थितियों में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता विकास– पृष्ठ –29

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन 2018– विविध भाषायी परिस्थितियों में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता विकास– पृष्ठ –29

देखें चित्रों पर चर्चा के लिए तैयार पासे के खेल का प्रमाण– https://www-haribhoomi-com/clip&preview/23409PC8hwCuNAYi0yztliM1CiXZOuWWYacrF7567255 तथा देखें हिन्दी भाषा शिक्षण में चित्रों पर चर्चा का प्रमाण – https://drive-google-com/file/d/1RFPhreODyVJ95TXqq_KFJ89jwqXBoy7R/view\usp¾sharing

देखें खेल–खेल में हिन्दी शिक्षण के प्रयोग का प्रमाण–https://drive-google-com/file/d/1bYXS&9yApDP9it8Cy8GGbnq1awQ361dN0g/view\usp¾sharing

देखें हिन्दी शिक्षण में नवाचार तकनीक के प्रयोग का प्रमाण–https://drive-google-com/file/d/1qZzSsDaA_jlfoH7lINPXZQrVVRXHaqZ6/view\usp¾sharing

देखें हिन्दी भाषा प्रयोगशाला का प्रमाण–https://drive-google-com/file/d/1ÛmJ7cDr12BGCGD5H3lu_Z1&rJbwt0aPj/view\usp¾sharing

देखें सूचना संचार तकनीक के प्रयोग का प्रमाण–https://drive-google-com/file/d/1XlAfm&zEIc8X4WWXaqqZYPJaRSu_8csA/view\usp¾sharing

देखें लिंक– https://www-open-edu/openlearncreate/mod/oucontent/view-php\id¾80264&printable¾1 देखें लिंक– http://epathshala-nic-in/download&app/

देखें व सुनें भाषा ज्ञान गीत–https://drive-google-com/file/d/1zk7XFy9NGTfV&sc0leiPÛMWZu65bFt2G/view\usp¾sharing

देखें डिकोडिंग शिक्षण का प्रमाण–https://drive-google-com/file/d/1pIZlNNÛ9jJBSOS4SwÛU5bnRpMwGKjB5E/view\usp¾sharing

देखें हिन्दी भाषा शिक्षण में प्रिंट चेतना का प्रमाण –https://drive-google-com/file/d/1r5Xny7LKsz4SY1RDo7sfi5B7p7JPpUlM/view\usp¾sharing

देखें सूचना संचार तकनीक के प्रयोग का प्रमाण–https://drive-google-com/file/d/1XlAfmzEIc8X4WWXaqqZYPJaRSu_8csA/view\usp¾sharing

देखें टिक टैक टो के खेल का प्रमाण –https://drive-google-com/file/d/1sw6EvCz1nG&NZv0oJA8JiWfI1fFLNwuU/view\usp¾sharing

संदर्भ ग्रंथ

डॉ० उमा मंगल – हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल भाग, दिल्ली 2007

ज्योति शर्मा भनोट दृ विश्व ज्योति हिन्दी शिक्षण, टंडन पब्लिकेशन्स लुधियाना 2015

डॉ० भगवती प्रसाद डिमरी – प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल भाग, दिल्ली 2007

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन 2018– विविध भाषायी परिस्थितियों में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता विकास

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन 2018– प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण रू एक समीक्षा

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन 2018– प्रारंभिक भाषा और साक्षरता रू एक झलक

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन 2018– भाषा व साक्षरता शिक्षण की रूपरेखा

http://epathshala-nic-in/download&app/

https://www-open-edu/openlearncreate/mod/oucontent/view-php\id¾80264&printable¾1

https://hi-wikipedia-org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A5%83%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A4%BE

अमर उजाला कैथल सिटी, 28 September, 2019

कैथल हरिभूमि, 10 October , 2019

https://drive-google-com/file/d/1zk7XFy9NGTfV&sc0leiPÛMWZu65bFt2G/view\usp¾sharing